परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तों,

इस बार चहकने की ललक अंक–11 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है, इससे पता चलता है, कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में

काफी बदलाव हुआ है और मैं आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसा ही अच्छा लिखेंगे। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी–अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

आपका साथी मैं
(चहकने की ललक)

जाड़े का मौसम

आपबीती

जाड़े के मौसम में हमलोग सुटर जाकिट टोपी इत्यादि पहनते हैं। आग जलाते हैं एवं आग से हाथ सेंकते हैं। जाड़े का मौसम में कुहरा बहुत ज्यादा रहता है। दो–दो तीन दिन धूप नहीं निकलता है। बहुत ठंडा लगता है ठंडा के वजह से स्कूल भी बंद हो जाता है। मास्टर जी होमवर्क घर के लिए दे देते हैं। घर में बैठकर होमवर्क करते हैं। कही बाहर नहीं निकलते हैं।

विट्टु कुमार, घर–सिकिया

कहानी

एक दिन एक रात एक लड़का अपने गाँव से भटक गया था, और उसके पास कुछ नहीं था तो एक जानवर उस लड़के को देखा तो वह समझ गया कि लड़का कोई न कोई जाल बिछाया है। तो उस लड़के का पीछा किया। लड़के ने उस भयानक जानवर को देख न पाया क्योंकि वहाँ बहुत कुहासा था इसलिए उसे कुछ नहीं दिखाई दिया और वह लड़का डरने लगा तब एक उसको घर दिखाई पड़ा तो वह सोचा कि मैं उस घर में छिप जाऊँ लेकिन उस घर का ताला बंद था तब उस जानवर को देख लिया तब उसके पास कोई भी रास्ता नहीं बचा था इसलिए वहाँ एक पत्थर था और उस पत्थर से जानवर को मार दिया लेकिन जानवर अभी हार नहीं माना था, और लड़का को समय मिलते ही वह लड़का भागा तभी एक और जानवर आगे से आ गया और लड़के को मार डाला और लड़का मर गया।

अनिश साह, कक्षा–4, गाँव सिकिया

लेख

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 1950 को हमारा देश गणतंत्र हुआ। इस दिन संविधान लागू हुआ यह हमारा राष्ट्रीय त्योहार है। सभी धर्म के लोग 26 जनवरी को

झंडा फहराते हैं। हमारे स्कूलों तथा कॉलेजों में झण्डा फहराया जाता है। हम सभी उस दिन मिठाईयाँ खाते हैं। तथा देश की सेवा करने का प्रण लेते हैं। यह हम सभी का प्रथम कर्त्तव्य है कि अपने देश की सेवा करना।

आकंक्षा कुमारी, कक्षा–5, बलिया

निबंध

गोविन्द सिंह जी का पूरा बचपन बिहार में बिता। जब 1675 में पिता तेगबहादुर जी ने दिल्ली में हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी तो उसके बाद मात्र नौ वर्ष की उम्र में गोविन्द जी ने गुरू की गद्दी धारण की।

पल्लवी सिंह (बालपथिक)
घर बड़हुलिया, कक्षा–9

हमार बोली

नया साल के दिन हम बहुत खुश रहनी अपना हितई में फोन करके नया साल मुबारक के शुभकामना देनी, नया कपड़ा

पहिनेनी हमार गाँव के सब सखी मिलकर पिकनिक मनावेनी जा, अंडा, भात बनाके सब जाना खानी सन फिर जवन बच जाला त बाट के घरे आ जानी सन फिर खुब खेलेनीसन अउरी शाम के लालटेन जलाके पढ़ेनीसन।

प्रिति कुमारी, घर–धर्मपुर, कक्षा–5

अपनी बात

जिस दिन मकर सक्रांति होता है, उस दिन हम सुबह में उठते हैं, और नहाते हैं, मेरी माँ घर का साफ–सफाई करती है, फिर मेरे घर के सभी लोग नहाते हैं, और चावल, दाल चिउरा, तिलवा पंडित जी को दान करते हैं, और उस दिन खुब दही चिउरा, मीठा, तिलवा खाते हैं, शाम के समय खिचड़ी बनता है, तो उसे भगवान को चढ़ाते हैं, फिर हम लोग खाते हैं।

प्रितम कुमार, घर धर्मपुर, कक्षा–5

निबंध

कार्तिक पूर्णिमा के दिन सिख समुदाय के प्रथम धर्मगुरू नानक देव का जन्मोत्सव मनाया जाता है। सिखों के प्रथम गुरू नानक देव जी का जन्म रामभोय स्थान पर 15 अप्रैल 1469 को हुआ था लेकिन श्रद्धालु गुरू नानक जी का जन्मोत्सव कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है।

रिशु सिंह
(बाल पथिक)
घर–बड़हुलिया
कक्षा–9

अपनी बात

क्रिसमस डे को हमलोग बड़ा दिन कहते हैं। उस दिन हमारे स्कूल में छुट्टी रहती है, तो हमलोग हमारे साथी दोस्त लोग पिकनिक मनाते है और खाते हैं, शाम के समय में पटाखा छोड़ते हैं, मंदिर, मस्जिद को सजाते हैं। उसमें दीपक जलाते हैं। उस दिन मेरे घर में बहुत अच्छा–अच्छा पकवान बनाता है, मैं खूब खाता हूं।

फिरोज अंसारी, घर–धर्मपुर, कक्षा–5

करने को कुछ

क्राफ्ट

मुझे पेंसिल के कतरन का फूल बनाना बहुत अच्छा लगता है, मैं जब भी पेंसिल छिलती हूं उसका छिलका को मैं उठाकर अपने पास रख लेती हूं, घर में लाकर एक पेज पे उस छिलका को गोलाकार आकार में चिपका देती हूं। फिर पेंसिल में उसका डिजाइन बनाकर उसमें रंग भर देती हूं। पेंसिल के छिलके से मैं फूल, पत्तियाँ इत्यादि चीजें बनायी जा सकता है।

मोबीना खातुन, कक्षा–5, घर– मिया के भटकन

खुले से प्रश्न

- क्या तुम अंडे को, बिना फोड़े बता सकते हो कि वह उबला है या कच्चा?
- अगर तीन दिन पहले शुक्रवार के पहले वाला दिन था तो परसों कौन सा दिन होगा?

शुभम कुमार, घर–बडहुलिया
बाल पथिक, कक्षा–6

शिक्षको की कलम से

कविता

रंगों की त्योहार है होली
खुशियों की बौछार है होली।
लाल, गुलाबी, पीले देखो,
रंग सभी निराले देखो।

पिचकारी भर–भर ले आते,
इक दूजे पर सभी चलाते।
होली पर अब ऐसा हाल,
हर चेहरे पर आज गुलाल।

आओ यारो इसी बहाने,
दुश्मन को भी चलो मनाने।

मधुबाला देवी, बाल घर, फेसिलिटेट्र

कविता

आसमान में चली पतंग
मन में उठी एक तरंग
लाल, गुलाबी, काली, नीली
मुझको तो भाती है पीली

डोर ना इसकी करना ढीली
सर–सर सर–सर चल सुरीली
कभी इधर तो कभी उधर
लहराती है फर–फर–फर

अंजली कुमारी, कक्षा–5, मियां के भटकन

हमार बोली

बहुत दिन के बात ह हम जब पहिला क्लास में पढ़ रहनी त हमार स्कूल में झंडा फहरावल जात रहे, तब हमार समझ मे ना आवे की स्कूल में काहे खातिर झंडा फहरावल जाला हम जब तनी बड़ हो गई तब अपना भैया से और अपना पापा से पुछनी की स्कूल में काहे खातिर झंडा फहरावल जाला तब हमार भैया बतवले कि हमार देश आज भईल, और हमार देश के संविधान लागू भईल त ऐही खुशी में फहरावल जाला, और स्कूल में प्रोग्राम भी होला।

नरगीस खातुन
कक्षा–5, मियां के भटकन

कविता

अच्छे बच्चे प्यारे बच्चे
मिलकर देश बनाओ
अपने जीवन मे तु आगे पढ़ते जाओ
करो भलाई नाम कमाओ
काम करो और सम्मान बढ़ाओ
अच्छे बच्चे प्यारे बच्चे
मिलकर देश बनाओ
अच्छे काम करो, तारो–सा चमक जाओ
सच्ची बाते कहने मे तुम
कभी नही घबराओ
अच्छे बच्चे प्यारे बच्चे
मिलकर देश बनाओ

किरण कुमारी कक्षा–5, धर्मपुर

चुटकुला

मैम– मैं जो कल याद करने के लिए दी थी वो याद हैं।
छात्र– हाँ
मैम– मैं जो भी सवाल करूंगी उसका जवाब फटा–फट देना।
छात्र– हाँ
मैम– एक लड़के को खड़ा की और बोली भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे।
छात्र– फटा–फट

नाम–पिंकी, ग्राम–सिकिया, वर्ग–9

एक मक्खी और मच्छर की शादी हुआ जब वह रात में सोया तो मच्छर ने मक्खी को काटा तो फिर मक्खी ने उठकर मोटेन जला दी। फिर वह मच्छर मर गया तो सुबह उठकर मक्खी रोने लगी। तो गाँव वाले ने पूछा मक्खी क्यों रो रही हो तो मक्खी ने बोली की हाय मेरी कल ही शादी हुआ आज मेरी पति मर गया।

अन्नु सिंह, क्लास 9,गाँव सिकिया

आने वाला थीम

अंक 12 के लिए

1. शादी
2. गर्मी की छुट्टी
3. नया एडमीशन
4. गेहूं की कटाई
5. गर्मी का मौसम

हमारे बाल चित्रकार

विशाल कुमार, धर्मपुर

किरण कुमारी

अनुरूद्ध कुमार, वर्ग–5, धर्मपुर

आयुष सिंह, वर्ग 4, भवराजपुर

अभय कुमार

नरगीस खातून, कक्षा–6, मियां के भटकन

निशा कुमारी, कक्षा–5, बेल्ही

रूबी खातून, कक्षा–4, मियां के भटकन

सिमरन खातुन, कक्षा–5, मियां के भटकन

आपबीती

जाड़े का मौसम और मै साइकिल लेकर स्कूल जा रही थी, अचानक से मेरे साइकिल का चैन गिर गया, मै बहुत परेशान हो गई कि मुझे चैन लगाने नही आता है, मैं क्या करूं? कैसे स्कूल जाऊं, और बहुत ज्यादा कुहासा भी था, कोई दिखाई नही दे रहा था, और मुझे बहुत डर लग रहा था, फिर मै सोची कि साइकिल लेकर घर चली जाती हूँ और साइकिल बन जायेगा तो दुसरे दिन स्कूल आई।

जिज्ञासा कुमारी
कक्षा–5
भवराजपुर

पहेली

हरी मैं लाल मैं
मैं हूँ बड़ी तेज
देखने में सीधी साधी
गुस्सा हैं बड़ा तेज।

एक थाल मोती से भरा
सबके सिर पर औंधा धरा
जैसे–जैसे थाल फिरे
मोती उससे एक न गिरे।

तीन अक्षर का मेरा नाम
आता हूं खाने का काम
मध्य कटे तो बन जाऊँ चाल
मेरा नाम सदा तत्काल

समली कुमारी, वर्ग–7
ग्राम–बलियाँ

उत्तर: मिर्च, ताल, चावल

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स